समाज और राजनीति दर्शन

रमेन्द्र

Scanned with CamScanner

राजनीति दर्शन का स्वरूप

राजनीति दर्शन दर्शनशास्त्र की एक शाखा है। **जब दार्शनिक विधि से राजनीति का अध्ययन करते हैं, तो उसे राजनीति दर्शन कहा जाता है।** राजनीति दर्शन के स्वरूप को स्पष्टता से समझने के लिए तीन बातों को समझना जरूरी है, (1) "राजनीति" क्या है? (2) दार्शनिक विधि क्या है? और (3) दार्शनिक विधि को राजनीति पर किस तरह लागू किया जाता है?

राजनीति

"राजनीति" अंग्रेजी शब्द "politics" का हिन्दी पर्याय है। "सामाजिक" शब्द का प्रयोग जब व्यापक अर्थ में किया जाता है, तो "राजनीति" और "राजनीतिक" भी उसके अन्तर्गत आ जाते हैं, क्योंकि "राजनीतिक" जीवन भी "सामाजिक" जीवन का ही एक अंग है।

प्रश्न यह उठता है कि सामाजिक जीवन के किस अंग को हम "राजनीतिक" कहेंगे? परम्परागत रूप से "राजनीति" को यह कह कर रेखांकित किया जाता है कि **"राजनीति" वह है, जिसका सम्बन्ध राज्य से है।** उदाहरण के तौर पर, गेटेल के अनुसार राजनीति विज्ञान "राज्य का विज्ञान है"। गेटेल की राय में राजनीति विज्ञान का मुख्य सम्बन्ध राज्य, सरकार और कानून से है। गेटेल के अनुसार राज्य के चार अनिवार्य मौलिक तत्त्व हैं: (i) आबादी (ii) क्षेत्र (iii) सरकार और (iv) सम्प्रभुता। सरकार का काम है कानून बनाना, कानून को लागू करना और कानून की व्याख्या करना।[1]

इसी तरह, गार्नर के अनुसार, "राजनीति विज्ञान की शुरूआत और अन्त राज्य से होती है"।

कभी-कभी "राजनीति" की परिभाषा शक्ति (power) और प्रभाव (influence) के माध्यम से भी की जाती है। उदाहरण के तौर पर, रार्बट ए. डैह्ल के अनुसार "राजनीतिक व्यवस्था" वह है जिसका सम्बन्ध नियन्त्रण (control), प्रभाव, शक्ति और प्राधिकार (authority) से होता है।[2]

दूसरी ओर, *Problems of Political Philosophy* के लेखक डी. डी. रैफेल के अनुसार "राजनीति" को "शक्ति" के माध्यम से परिभाषित करने का प्रयत्न सन्तोषजनक नहीं है, क्योंकि "राजनीति" का सम्बन्ध हर किस्म की "शक्ति" से नहीं है। उदाहरण के तौर पर,

Scanned with CamScanner

राजनीति का सम्बन्ध वाष्प इंजन की यांत्रिक शक्ति से नहीं है। ''शक्ति'' का एक अर्थ है दूसरों से वैसा करवा पाने की क्षमता जैसा कोई चाहता है। ''राजनीति'' का इसी अर्थ में ''शक्ति'' से सम्बन्ध है। लेकिन इस किस्म की ''शक्ति'' का प्रयोग भी कई सन्दर्भों में होता है, जैसे, परिवार के अन्दर या शिक्षण संस्थाओं में। माँ-बाप कई बार बच्चों से वैसा आचरण करवाने में सफल हो जाते हैं, जैसा वे चाहते हैं, या इसी तरह, शिक्षण संस्थाओं में शिक्षक छात्रों से। पर इसे ''राजनीति'' नहीं कहा जा सकता है। ''राजनीति'' का सम्बन्ध ''शक्ति'' से तब होता है, जब शक्ति का इस्तेमाल **राजनीतिक सन्दर्भ** में किया जाता है। और सन्दर्भ को ''राजनीतिक'' कब कहा जाता है, इसकी व्याख्या हम ''राज्य'' की अवधारणा को लाये बिना नहीं कर सकते हैं। इसलिए, रैफेल के अनुसार, ''राजनीति'' को ''राज्य'' के माध्यम से परिभाषित करने का पुराना तरीका ही बेहतर हैं।

संक्षेप में, ''राजनीति'' वह है जिसका सम्बन्ध राज्य से है। राज्य के प्रमुख तत्त्व हैं: (i) आबादी (ii) क्षेत्र (iii) सरकार और (iv) सम्प्रभुता। फिर, इसमें सरकार के मुख्य काम तीन हैं: (i) कानून बनाना (ii) कानून को लागू करना और (iii) कानून की व्याख्या करना। आधुनिक लोकतन्त्र में ये काम क्रमशः सरकार की तीन शाखाओं द्वारा किए जाते हैं: (i) विधायिका (ii) कार्यपालिका और (iii) न्यायपालिका।

(''राज्य'' और ''सम्प्रभुता'' की अवधारणा का विस्तृत विश्लेषण आगे के अध्यायों में किया गया है।)

Scanned with CamScanner

राजनीति दर्शन और राजनीतिक सिद्धान्त

अक्सर ''राजनीति दर्शन'' और ''राजनीतिक सिद्धान्त'' (political theory) शब्दों का प्रयोग लगभग पर्यायवाची के रूप में किया जाता है। लेकिन, रैफेल ने इनके बीच एक महत्त्वपूर्ण अन्तर करने का प्रयत्न किया है। रैफेल के अनुसार, राजनीति-वैज्ञानिकों द्वारा किए जाने वाले सैद्धान्तिक कार्य और राजनीति दर्शन के बीच भी ठीक वैसा ही अन्तर है, जैसा समाजशास्त्रियों द्वारा किए जाने वाले सैद्धान्तिक कार्य और समाज दर्शन के बीच। समाज वैज्ञानिक भी प्रकृतिके वैज्ञानिकों की तरह अपने क्षेत्र में तथ्यों की व्याख्या का प्रयत्न करते हैं। इसके लिए वे निरीक्षण, प्राक्कल्पना और सत्यापन की वैज्ञानिक विधि की सहायता लेते हैं। रैफेल के अनुसार, राजनीति-वैज्ञानिक राजनीति को समझने और उसकी व्याख्या करने के लिए वैज्ञानिक विधि का इस्तेमाल करते हुए जो सिद्धान्त बनाते हैं, उसे ''राजनीतिक सिद्धान्त'' कहना चाहिए। और जब दार्शनिक विधि से राजनीति के बारे में चिन्तन किया जाए, तो उसे राजनीति दर्शन कहना चाहिए।

''राजनीतिक सिद्धान्त'' और ''राजनीति दर्शन'' के बीच रैफेल द्वारा किया गया अन्तर महत्त्वपूर्ण और किए जाने योग्य है। लेकिन व्यवहार में इस अन्तर का पालन नहीं किया जा रहा है। जैसा कि रैफेल ने स्वयं कहा है, इन दोनों शब्दों का प्रयोग लगभग पर्यायवाची के रूप में किया जाता है। उदाहरण के तौर पर, अगर हम सेबिन की *A History of Political Theory*[1] या बार्कर की *Principles of Social and Political Theory*[2] या. सी. इ. एम. जोड की *Introduction to Modern Political Theory*[3] को देखते हैं, तो उनमें हमे रैफेल द्वारा बताए गए अर्थ में ''राजनीतिक सिद्धान्त'' की बहुत

1. Morris Ginsberg, *Sociology* (Delhi: Surjeet Publications, 1979), p. 26

Scanned with CamScanner

अधिक चर्चा नहीं मिलेगी। बल्कि इन पुस्तकों में जो चर्चा की गयी है उसे ''राजनीति दर्शन'' कहा जा सकता है या, अगर हम ''राजनीतिक दर्शन'' शब्द को ऊपर बतलाए तकनीकी अर्थ के लिए सुरक्षित रखना चाहते हों, तो हम उसे ''राजनीतिक चिन्तन'' (*Political Thought*) कह सकते हैं। यहाँ पर ''राजनीतिक चिन्तन'' का अर्थ होगा राज्य से सम्बन्धित बुनियादी समस्याओं पर समीक्षात्मक चिन्तन, जिसमें रैफेल द्वारा बतलाए गए अर्थ में ''राजनीतिक सिद्धान्त'' और ''राजनीति दर्शन'' के बीच स्पष्ट अन्तर न किया गया हो।

राजनीति दर्शन और राजनीति विज्ञान

राजनीति दर्शन समाज दर्शन का ही एक अंग है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि राजनीति दर्शन और राजनीति विज्ञान (Political Science) के बीच भी ठीक वैसा ही सम्बन्ध है, जैसा कि समाज दर्शन और समाजशास्त्र के बीच। समाज दर्शन में समाज का अध्ययन दार्शनिक दृष्टि से किया जाता है; जबकि समाजशास्त्र में समाज का अध्ययन मुख्यतः यथार्थवादी दृष्टि से किया जाता है। समाज दार्शनिक अपने चिन्तन के लिए समाजशास्त्र द्वारा प्राप्त जानकारी पर निर्भर हैं। इसी तर्ज पर हम राजनीति दर्शन और राजनीति विज्ञान को भी समझ सकते हैं। लेकिन, वास्तव में राजनीति दर्शन और राजनीति विज्ञान के बीच इस किस्म का सरल और साफ-सुथरा सम्बन्ध नहीं है। दरअसल में, वास्तविक स्थिति कहीं अधिक जटिल है। समाजशास्त्र अपेक्षाकृत नवीन विषय है, और इसके संस्थापकों ने इसकी स्थापना एक यथार्थवादी विज्ञान के रूप में की। जबकि राजनीति विज्ञान या राजनीतिशास्त्र का अध्ययन-अध्यापन प्लेटो और अरिस्टॉट्ल जैसे प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों के समय से होता आ रहा है। परम्परागत रूप से विश्वविद्यालयों में जिस तरह राजनीति विज्ञान का अध्ययन और अध्यापन होता है, उसमें राजनीति दर्शन का भी समावेश रहता है।

हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि रैफेल ने ''राजनीतिक सिद्धान्त'' और ''राजनीति दर्शन'' के बीच अन्तर करने का प्रयत्न किया है। लेकिन, हमने यह भी देखा है कि व्यवहार में राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में ''राजनीति सिद्धान्त'' और ''राजनीति दर्शन'' का प्रयोग लगभग पर्यायवाची के रूप में किया जाता है। आम तौर से, राजनीतिशास्त्र के लेखक जिसे ''राजनीति सिद्धान्त'' कहते हैं वह अगर पूरी तौर से राजनीति दर्शन न भी हो, तो भी उसमें काफी हद तक राजनीति दर्शन का समावेश रहता है। इस तरह, परम्परागत रूप से राजनीति दर्शन का अध्ययन राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत शामिल रहा है। उदाहरण के तौर पर, अपनी पुस्तक *Political Science* में गेटेल ने राजनीति विज्ञान की परिभाषा ''राज्य के विज्ञान'' के रूप में की है। लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध सिर्फ राजनीतिक संस्थाओं से नहीं बल्कि राजनीतिक

Scanned with CamScanner

विचारों से भी है। इनमें राजनीति दार्शनिकों द्वारा रचे गए राज्य से सम्बन्धित सिद्धान्त और सामान्य जनों का राजनीतिक चिन्तन भी शामिल है।

रॉबर्ट ए. डैह्ल ने अपनी पुस्तक *Modern Political Analysis* में ''राजनीतिक विश्लेषण'' की महत्त्वपूर्ण और रोचक चर्चा की है। डैह्ल के अनुसार राजनीति का विश्लेषण चार दृष्टिकोणों से किया जा सकता है, एक, इन्द्रियानुभविक दृष्टिकोण (empirical orientation), दो, मानक दृष्टिकोण (normative orientation), तीन, नीतिनिर्धारक दृष्टिकोण (policy orientation), और, चार, शब्दमीमांसीय दृष्टिकोण (semantics orientation)[1]। (इसकी विस्तृत व्याख्या अगले अध्याय में की गयी है।)

डैह्ल के अनुसार राजनीति विज्ञान का विषयवस्तु राजनीतिक विश्लेषण है। डैह्ल के अनुसार, हालांकि ''राजनीति विज्ञान'' शब्द से ऐसा लगता है जैसे राजनीति विज्ञान में राजनीति का अध्ययन सिर्फ इन्द्रियानुभविक दृष्टि से किया जाता है, जबकि वास्तव में ऐसा नही है। राजनीतिक वैज्ञानिकों की, और विश्वविद्यालयों के राजनीति विज्ञान के विभागों की इन चारो किस्म के विश्लेषणों में रुचि रहती है। राजनीति विज्ञान के विभागों के पाठ्यक्रमों में राजनीतिक व्यवस्थाओं का वर्णन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह समझने का प्रयत्न किया जाता है कि क्या है, न कि क्या होना चाहिए। लेकिन दूसरी ओर, उनके पाठ्यक्रमों में मानक दृष्टि से भी राजनीति का अध्ययन किया जाता है, खास तौर से महान दार्शनिकों के राजनीतिक विचारों का। कई पाठ्यक्रमों में, दार्शनिकों की ही तरह, मानक और इन्द्रियानुभाविक विश्लेषण दोनों का ही समावेश रहता है। इसी तरह, डैह्ल के अनुसार राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत शब्दमीमांसीय दृष्टि से भी राजनीतिक अवधारणाओं का विश्लेषण किया जाता है, क्योंकि इसके बिना राजनीति के अध्ययन में आगे बढ़ना सम्भव नहीं है।

जैसी कि हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं, राजनीति दर्शन के क्षेत्र में राजनीतिक अवधारणाओं का स्पष्टीकरण और राजनीतिक विश्वासों का समीक्षात्मक मूल्यांकन किया जाता है। इसके अलावा, मानक दृष्टि से राजनीति के बारे में भी विचार किया जाता है। इस तरह, परम्परागत रूप से राजनीति दर्शन राजनीति विज्ञान का अंग रहा है। ''राजनीति विज्ञान'' में ''विज्ञान'' शब्द का प्रयोग ''तर्कसंगत और व्यवस्थित अध्ययन'' के अर्थ में किया जाता है, न कि ''इन्द्रियानुभविक अध्ययन'' के अर्थ में।

जब हम राजनीति दर्शन को दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में लेते हैं तो हम यह कह सकते हैं कि राजनीति दार्शनिक राजनीतिक तथ्यों की जानकारी के लिए राजनीति विज्ञान के इन्द्रियानुभविक पक्ष पर निर्भर हैं। इस दृष्टि से राजनीति दर्शन और राजनीति विज्ञान के बीच निकट सम्बन्ध है, और दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

❑

Scanned with CamScanner